अध्याय 7

अय्यूब का उत्तर (भाग 2)

जीवन का उबाऊ होना (7:1-6)

1"क्या मनुष्य को पृथ्वी पर कठिन सेवा करनी नहीं पड़ती? क्या उसके दिन मजदूर के से नहीं होते? 2जैसा कोई दास छाया की अभिलाषा करे, या मजदूर अपनी मजदूरी की आशा रखे; 3वैसा ही मैं अनर्थ के महीनों का स्वामी बनाया गया हूँ, और मेरे लिये क्लेश से भरी रातें ठहराई गई हैं। 4जब मैं लेट जाता तब कहता हूँ, 'मैं कब उठूँगा?' पर रात लम्बी होती जाती है, और पौ फटने तक छटपटाते छटपटाते उकता जाता हूँ। 5मेरी देह कीड़ों और मिट्टी से ढकी हुई है; मेरा चमड़ा सिमट जाता, और फिर गल जाता है। 6मेरे दिन जुलाहे की ढरकी से अधिक फुर्ती से चलनेवाले हैं और निराशा में बीते जाते हैं।"

अपने भाषण को जारी रखते हुए अय्यूब ने अपनी निरन्तर पीड़ा का वर्णन बड़े विस्तार से किया। पद्य की केवल पहली आयत ही सीधा प्रश्न है।

आयतें 1, 2. मज़दूर का जीवन बड़ा कठिन होता था। ये कर्मचारी आम तौर पर बड़े गरीब होते थे (लैव्यव्यवस्था 25:39-55), और उन्हें एक दिन के लिए ही मज़दूरी पर रखा जाता था (मत्ती 20:1, 8)। अपने परिवारों के लिए प्रतिदिन का भोजन देने के लिए उन्हें बड़ी मुश्किल से **मज़दूरी** मिलती थी (लैव्यव्यवस्था 19:13; व्यवस्थाविवरण 24:14, 15)। **दास** किसी चट्टान या पेड़ की **छाया** में विश्राम करने की ही उम्मीद कर सकता था। मध्य पूर्व में घूमने के अपने अनुभव से ऐल्बर्ट बार्नस ने यह अवलोकन किया:

> पूर्वी देशों में कुछ भी मनोहर नहीं होता, जब सूर्य जलती हुई रेत के ऊपर भीषण गर्मी देता है, सिवाय इसके कि पेड़ की छाया में या बड़ी सी चट्टान की छाया मिल जाए। आम तौर पर खुली हवा में कारवां रुकने पर भी जब लेखक को किसी चट्टान या पुरानी दीवार के सहारे उन्हें आराम करना मिल जाता हो, वह भी अपना उल्लास और अपने आप में बड़ी विलासता का एहसास होता तो उसे यह और पवित्र शास्त्र के अन्य हवाले याद आते।[1]

आयतें 3-6. इन आयतों में यह संकेत मिलता है कि अय्यूब कई **महीनों** तक दुःख सहता रहा। उसे दिन या **रातें** कोई चैन नहीं देते थे। उसके पहले वाले फोड़े ठीक हो जाते तो फिर से और निकल आते। हम पक्का नहीं जानते कि अय्यूब को कौन सा रोग लगा था पर यहां तथा अन्य स्थानों के विवरणों से संकेत मिलता है कि यह बड़ा ही पीड़ादायक था। **"मेरे दिन जुलाहे की ढरकी से अधिक फुर्ती से चलनेवाले हैं।"** जुलाहे की ढरकी खड्डी के आर पास इतनी फुर्ती से चलती है कि उसे देख पाना कठिन होता है। अय्यूब के दिन ऐसे ही थे और वह मायूस था कि

वे **निराशा में बीते जाते** थे (4:6 पर टिप्पणियां देखें)।

जीवन का छोटा होना (7:7-10)

[7]''याद कर कि मेरा जीवन वायु ही है; और मैं अपनी आँखों से कल्याण फिर न देखूँगा। [8]जो मुझे अब देखता है उसे मैं फिर दिखाई न दूँगा; तेरी आँखें मेरी ओर होंगी परन्तु मैं न मिलूँगा। [9]जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है, वैसे ही अधोलोक में उतरनेवाला फिर वहाँ से नहीं लौट सकता; [10]वह अपने घर को फिर लौट न आएगा, और न अपने स्थान में फिर मिलेगा।''

आयत 7. यहां पर अय्यूब अपने मित्रों को सम्बोधन करने से मुड़कर सीधे परमेश्वर से बातें करने लगा। पद्य का आरम्भ आदेशसूचक शब्द **याद कर** से साफ़ होता है जो कि इब्रानी भाषा में अन्य पुरुष एकवचन है। अय्यूब ने परमेश्वर से उसकी दुर्दशा में उसे ''याद'' करने को कहा। पवित्र शास्त्र में **जीवन** की तुलना आम तौर पर **वायु,** छाया या भाप के साथ की गई है (8:9; 14:2; भजन संहिता 39:5, 11; 144:4; सभोपदेशक 6:12; यहोशू 4:14)। अय्यूब मायूस था कि उसने **कल्याण फिर न** देखना था।

आयतें 8-10. अय्यूब ने ऐसे जीवन की कल्पना की जिससे पृथ्वी पर उसका जीवन होना था। **अधोलोक** इब्रानी शब्द *शियोल* (*sh^{e}'ol*) का अनुवाद है जो यूनानी शब्द ''हेडिस'' (*haidēs*) का समानांतर है। ''अधोलोक'' मूल क्रिया शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ ''पूछना'' है। NASB, में इसका अनुवाद कई जगह ''कब्र'' किया गया है, परन्तु अधिकतर इसे लिप्यंत्रित किया गया है (जैसे यहां)।[2] यूनानी शब्द ''हेडिस'' मृतकों के अदृश्य संसार (अच्छे या बुरे) को दर्शाते हुए ''नकारात्मक'' के साथ देखने के लिए मूल क्रिया शब्द से निकला है।[3] अय्यूब ने कहा कि अधोलोक (शियोल) में जाने वाला **अपने घर को फिर लौट न आएगा, और न अपने स्थान में फिर मिलेगा**। अन्य शब्दों में मर जाने पर वह ''नज़रों से ओझल, दिमाग से बाहर'' हो जाता है।

जीवन की कड़वाहट (7:11-21)

[11]''इसलिये मैं अपना मुँह बन्द न रखूँगा; अपने मन का खेद खोलकर कहूँगा; और अपने जीव की कड़ुवाहट के कारण कुड़कुड़ाता रहूँगा। [12]क्या मैं समुद्र हूँ, या मगरमच्छ हूँ, कि तू मुझ पर पहरा बैठाता है? [13]जब जब मैं सोचता हूँ कि मुझे खाट पर शान्ति मिलेगी, और बिछौने पर मेरा खेद कुछ हल्का होगा; [14]तब तब तू मुझे स्वप्नों से घबरा देता, और दर्शनों से भयभीत कर देता है; [15]यहाँ तक कि मेरा प्राण फाँसी को और जीवन से मृत्यु को अधिक चाहता है। [16]मुझे अपने जीवन से घृणा आती है; मैं सर्वदा जीवित रहना नहीं चाहता। मेरा जीवनकाल साँस सा है, इसलिये मुझे छोड़ दे। [17]मनुष्य क्या है कि तू उसे महत्व दे, और अपना मन उस पर लगाए, [18]और प्रति भोर को उसकी सुधि ले, और प्रति क्षण उसे जाँचता रहे? [19]तू कब तक मेरी ओर आँख लगाए रहेगा, और इतनी देर के लिये भी मुझे न

छोड़ेगा कि मैं अपना थूक निगल लूँ? [20]हे मनुष्यों पर नजर रखनेवाले, मैं ने पाप तो किया होगा, पर मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा? तू ने क्यों मुझ को अपना निशाना बना लिया है, यहाँ तक कि मैं अपने ऊपर आप ही बोझ बना हूँ? [21]तू क्यों मेरा अपराध क्षमा नहीं करता, और मेरा अधर्म क्यों दूर नहीं करता? अब तो मैं मिट्टी में सो जाऊँगा, और तू मुझे यत्न से ढूँढ़ेगा पर मेरा पता नहीं मिलेगा।''

7:7–10 में बताए गए कारणों से अय्यूब ने अपने जीवन की कड़वाहट को बताते हुए अपने मन को हलका किया।

आयत 11. ''मैं अपना मुँह बन्द न रखूँगा।'' अपनी अत्यधिक पीड़ा के कारण अय्यूब अपने विलाप में सब कुछ परमेश्वर पर छोड़ देता है। उसे उम्मीद थी कि परमेश्वर, जो दया और करुणा से भरपूर है, उसकी पुकार को सुनकर उसकी विनती का उत्तर देगा। **''अपने मन का खेद खोलकर कहूँगा; और अपने जीव की कड़ुवाहट के कारण कुड़कुड़ाता रहूँगा।''** ''खेद'' बाहरी शक्तियों से परेशान, मजबूर होकर कठोर ''भावनात्मक अनुभव'' को कहा गया है।[4] इसी प्रकार से ''कड़वाहट'' ''मन को चूर-चूर करने वाले अनुभव का भावनात्मक उत्तर'' है।[5]

आयत 12. ''क्या मैं समुद्र हूँ, या मगरमच्छ हूँ, कि तू मुझ पर पहरा बैठाता है?'' अय्यूब को लगा कि अवश्य ही परमेश्वर ने उसे बड़ा विरोधी मान लिया होगा। जॉन ई. होर्टले ने सुझाव दिया, ''उपपद के बिना, [पुराने नियम] 'समुद्र' [*yam, याम*] में वैश्विक शक्ति को दर्शाता है; अन्य निकट पूर्व की संस्कृतियों में समुद्र को देवता माना जाता था।''[6] ''मगरमच्छ'' (*tannin, टान्निन*) शब्द अय्यूब की पुस्तक में केवल यहीं मिलता है। इस शब्द का अनुवाद ''नाग'' (भजन संहिता 91:13), ''लिव्यातान या अजगर'' (यशायाह 27:1), और ''मगरमच्छ'' भी किया गया है (यिर्मयाह 51:34)। ''पहरा'' (*mishmar, मिशमार*) को अय्यूब ने सुरक्षा नहीं बल्कि ''बंधन'' के रूप में देखा।

आयतें 13, 14. खाट विश्राम और ताजगी पाने का स्थान होना चाहिए था। इसके बजाय, यह भय और आतंक का स्थान बन गया था। **भयभीत** (*ba'ath, बाथ*) अय्यूब की पुस्तक के विशेष शब्दों में से है। पुराने नियम में तीव्र रूप में यह कुल तेरह में से आठ बार अय्यूब की पुस्तक में मिलता है (3:5; 7:14; 9:34; 13:11, 21; 15:24; 18:11; 33:7)।[8]

आयतें 15, 16. इन विचारों के कारण अय्यूब कहने लगा कि भला होता कि वह दुःख सहने के बजाय मर ही जाता। वह अपनी निश्चित **मृत्यु** की राह देखने लगा। एक बार फिर उसने अपने जीवन की तुलना **सांस** से की (7:7 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 17. ''मनुष्य क्या है कि तू उसे महत्व दे, और अपना मन उस पर लगाए?'' भजन लिखने वाले ने ऐसा ही प्रश्न पूछा था, ''तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?'' (भजन संहिता 8:4)। परन्तु भजन लिखने वाला परमेश्वर को मनुष्य को ऊंचा करने के लिए सराह रहा था। भजनों में एक और हवाले में आयत 17 वाला ही विचार मिलता है: ''हे यहोवा, मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है, या आदमी क्या है, कि तू उसकी कुछ चिन्ता करता है? मनुष्य तो सांस के समान है; उसके दिन ढलती हुई छाया के समान हैं'' (भजन संहिता 144:3, 4)।

आयतें 18-21. भजन लिखने वाले ने जहां उसका ध्यान रखने के लिए परमेश्वर की प्रशंसा की, वहीं अय्यूब ने माना कि परमेश्वर का ध्यान रूखे परीक्षक वाला है जो दण्ड बांटता है। उसने चाहा कि परमेश्वर उससे अपनी **नज़र** फेर ले। उसने मांग की कि उसका पाप और विद्रोह बताया जाए, क्योंकि उसे भी लगने लगा था कि उसकी दुर्दशा उसके पाप के दण्ड के कारण थी। परन्तु अब उसे समझ में आया कि दु:ख उस पर भी आता है जो धर्मी जीवन बिताता है। अय्यूब का मानना था कि वह परमेश्वर के दण्ड का **निशाना** बन गया था। क्योंकि वह मृत्यु को इस स्थिति से निकालने की एकमात्र सम्भावना के रूप में देखता था।

प्रासंगिकता

परमेश्वर के साथ खराई से बात करें (अध्याय 7)

परमेश्वर के हर बालक का जीवन गम्भीर और सार्थक प्रार्थना भरा होना चाहिए (मत्ती 6:5-13; लूका 11:1-4; 1 कुरिन्थियों 14:15; इफिसियों 6:18; फिलिप्पियों 4:6; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17; 1 तीमुथियुस 2:8; याकूब 5:13-18)। प्रार्थना परमेश्वर के हृदय को छूती और उसे विवश करती है। यह हमें फल देती और हमें और निर्मल बनाती है। यह हमें स्वर्ग में हमारे पिता के साथ जोड़ती है। जबर्दस्त बातें तभी होती हैं जब हम प्रार्थना करते हैं।

हमारे प्रभु को प्रार्थना के महत्व का पता था (मरकुस 1:35)। बाइबल के बड़े-बड़े सेवक ऐसे लोग थे जो बड़े उत्साह से प्रार्थना किया करते थे। मूसा परमेश्वर से ''इस प्रकार आमने सामने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे'' (निर्गमन 33:11)। नहेम्याह ने जब यरूशलेम की हालत सुनी तो वह ''दिन रात'' प्रार्थना करता रहा (नहेम्याह 1:6)। मुस्तैद शास्त्री एज्रा ने ''उपवास का प्रचार'' किया और ''अपने और अपने बाल बच्चों और अपनी समस्त सम्पति के लिए'' सुरक्षित यात्रा की प्रार्थना की और बाइबल बताती है कि ''परमेश्वर ने हमारी सुनी'' (एज्रा 8:21-23)। दानिय्येल 6:10 कहता है ''जब दानिय्येल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है, तब वह अपने घर में गया ... और अपनी रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के साम्हने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था, वैसा ही तब भी करता रहा।'' दाऊद ने कहा, ''मैं यहोवा के पास गया, तब उस ने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया'' (भजन संहिता 34:4)। इसी अध्याय में दाऊद ने आगे कहा, ''यहोवा की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उसकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं। ... धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उनको सब विपत्तियों से छुड़ाता है'' (भजन संहिता 34:15-17)।

हम कितनी बार और कितने जोश के साथ प्रार्थना करते हैं ? जब हम परमेश्वर से बातें करते हैं तो हम अपने विचारों, भावनाओं और विनतियों, प्रश्नों और चिंताओं को उसे बताते हुए उसके साथ कितने स्पष्ट और ईमानदार होते हैं ?

अय्यूब 7:14 के आधार पर ऐसा लगता है कि जैसे अय्यूब केवल एलीपज से ही नहीं बल्कि परमेश्वर से भी बातें कर रहा था। एलीपज ने अय्यूब को शांति, आसरा, दिलेरी, या वे उत्तर नहीं दिए थे जिनकी उसे आवश्यकता और तलाश थी। अय्यूब का परमेश्वर चुप था; ऐसा

लगता था कि वह उससे दूर, कहीं दूर है। ऐसे समयों में हें अय्यूब के उदाहरण को मानना चाहिए और परमेश्वर से खुलकर और खराई से बात करनी चाहिए।

अय्यूब ने ईमानदरी से प्रश्न पूछे। अपनी प्रार्थनाओं में परमेश्वर से प्रश्न पूछे। हम सब के मन में प्रश्न होते हैं। अपनी प्रार्थनाओं में हम अपनी भावनाओं और निराशाओं को कितनी खराई से साझा करते हैं? गहरी वेदना में अय्यूब ने परमेश्वर के साथ खराई से बात की और उसके साथ अपने प्रश्नों और निराशाओं को उसके साथ साझा किया। 7:12 में अय्यूब ने परमेश्वर से पूछा, ''क्या मैं समुद्र हूँ, या मगरमच्छ हूँ, कि तू मुझ पर पहरा बैठाता है?'' आयत 17 में अय्यूब ने परमेश्वर से पूछा, ''मनुष्य क्या है कि तू उसे महत्व दे, और अपना मन उस पर लगाए।'' अय्यूब का तात्पर्य था कि यदि परमेश्वर को सममुच में उसकी परवाह होती तो वह इसे भयानक अनुभव से बचा लेता।

जैसा उसने अध्याय 3 में किया था, वैसा ही अय्यूब परमेश्वर से पूछता रहा, ''क्यों?'' 7:20 में अय्यूब ने परमेश्वर से पूछा, ''तू ने क्यों मुझ को अपना निशाना बना लिया है?'' हमारा परमेश्वर हमारे ''क्यों'' के प्रश्नों से निपट सकता है, बेशक इस प्रश्न से आशय सही नहीं है। आयत 21 में, अय्यूब ने परमेश्वर से पूछा ''तू क्यों मेरा अपराध क्षमा नहीं करता?'' जब ''क्यों'' के प्रश्न पूछने आवश्यक हों, तो हमें आगे बढ़कर परमेश्वर से उत्तर और समझ मांगनी चाहिए।

अय्यूब ने खराई से माना कि वह सो नहीं पाता था। 7:4 में अय्यूब ने कहा, ''जब मैं लेट जाता तब कहता हूँ, 'मैं कब उठूँगा?' पर रात लम्बी होती जाती है, और पौ फटने तक छटपटाते छटपटाते उकता जाता हूँ।'' हमारी शारीरिक और भावनात्मक सेहत के लिए अच्छी नींद का आना जरूरी है। बहुत से कारण हैं कि लोग अनिद्रा का शिकार होते हैं और सो नहीं पाते हैं। कई डॉक्टरी कारण हैं, जैसे एलर्जी, रक्त का जमाव, गठिया, और दर्द। खाने पीने के कारणों में सोने से पहले बहुत अधिक मात्रा में चीनी का लेना या बहुत अधिक मात्रा में कैफिन पीना हो सकता है। वातावरण के कारणों में बहुत अधिक गर्मी होना, सर्दी होना या उमस होना हो सकता है। भावनात्मक कारणों में उदासी या चिंता हो सकती है। तनाव भी नींद न आने का एक बड़ा कारण होता है। कारण जो भी हो, लेटकर सो न पाना यानी ''पौ फटने तक छटपटाते छटपटाते,'' सो न पाना दयनीय स्थति है।

फिर भी अय्यूब की हालत ऐसी ही थी। शारीरिक रूप में वह अत्यधिक पीड़ा में था। भावनात्मक रूप में वह सूख चुका था। मानसिक रूप में वह परेशान था और उसके मन में बहुत से प्रश्न थे, जिनके उत्तर उसे नहीं मिले थे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अय्यूब क्यों नहीं सो पाता था। अफसोस की बात है कि अय्यूब इस निष्कर्ष पर पहुंच गया कि ''उसे अनर्थ के महीनों का स्वामी'' बनाया गया था और परमेश्वर ने उसे कई क्लेश से भरी रातें दे दी थीं (7:3)। मैं नहीं मानता कि परमेश्वर अपने निर्दोष, अनमोल बालकों को कलेश भरी रातें देना चाहता है, फिर भी अय्यूब ने खराई से अपने परमेश्वर से बात की। अय्यूब के लिए रात खत्म न होने वाली थी।

अय्यूब ने खराई से भविष्य की अपनी निराशा को बताया। आयत 7 में अय्यूब ने सबसे अफसोसजनक बात की जो कोई कर सकता है, ''मैं अपनी आंखों से कल्याण को न देखूंगा।'' अय्यूब को यह मानकर कि जो कुछ उसके साथ हुआ है यह यकीन नहीं था कि वह फिर से दोबारा

खुश हो सकता है। यीशु मसीह के सुसमाचार का सेवक होने के नाते मुझे कई ऐसे लोग मिले हैं जो मानसिक और भावनात्मक स्थिति में यहां तक पहुंच सके हैं। कइयों ने इतना बड़ा नुकसान उठाया है कि उनका मानना है कि वे कभी इस हद तक चंगे नहीं हो सकते कि दोबारा से जीवन का आनन्द ले सकें। दूसरों को अपनी पीड़ा या निराशा में से निकलने का कोई रास्ता नहीं दिखता और इसलिए उन्होंने उम्मीद छोड़ दी है कि उन्हें दोबारा से जीवन का आनन्द मिल सकता है।

एक दिन मैं गाड़ी में दफ्तर गया, पर हर जगह पार्किंग में गाड़ियां ही गाड़ियां थीं। एक पुलिस वाला गेट पर खड़ा था। जब मैंने उससे पूछा कि क्या मैं उसकी सहायता करूं, तो उसने मुझे एक आदमी के बारे में बताया, जो हमारी पार्किंग से दूसरी ओर वैन में बैठा था। पुलिस वाले ने कहा, ''वह प्रचारक से बात करना चाहता है, पर आपको उसके पास जाकर उलझने की जरूरत नहीं है क्योंकि उसके पास गन है।''

मैंने उससे बात करने का फैसला कर लिया और जब मैं चलकर वैन के पास पहुंचा तो मैंने देखा कि उस आदमी ने गन अपनी कनपटी पर लगाई हुई है। मुझे नहीं मालूम था कि क्या कहना है; जो बात मेरे मुंह से निकली वह यह थी: ''मुझे नहीं मालूम कि आपके जीवन में क्या होने वाला है पर इतना मालूम है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है।'' उसने उत्तर दिया, ''परमेश्वर मुझ से कैसे प्रेम कर सकता है जब उसने मेरे बेटे के साथ इतना कुछ होने दिया?'' मुझे नहीं पता था कि उसके बेटे के साथ क्या हुआ है, पर मुझे बहुत सी बातों की समझ आ गई थी। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि उस आदमी के जीवन में कुछ दु:खदायक घटना, बुरी बात या दर्दनाक हो रहा था; यह स्पष्ट था कि यह आदमी नहीं जानता था कि उसका सामना कैसे करेगा। यह भी स्पष्ट था कि इस आदमी के मन में पमेश्वर के प्रेम के बारे में संदेह था। वह परमेश्वर पर दखल देकर उसके बेटे के लिए हालात बेहतर न करने का दोष लगा रहा था, जिससे उसके जीवन में शांति मिलती। अफ़सोस कि यह आदमी उस बिन्दु पर पहुंच गया था जहां भविष्य के लिए कोई आशा नहीं और उसका विश्वास नहीं था कि वह दोबारा कभी खुश हो सकता है।

मैंने उसे बताया कि मुझे नहीं मालूम कि उसके बेटे के साथ क्या हुआ, पर जो भी हुआ है, परमेश्वर को मालूम है और परमेश्वर को परवाह है। इस आदमी ने कहा, ''परमेश्वर कहां था जब मेरा बेटा मर गया?'' मुझे एक जबर्दस्त बात याद आई जो मैंने एक उपदेश में कहीं सुनी हुई थी और मैंने उत्तर दिया, ''वह बिल्कुल वहीं था, जब उसके बेटे की मौत हुई।'' इस आदमी ने गन नीचे रख दी और बेहोश हो गया; फिर अधिकारियों ने आकर उसकी सहायता की।

अय्यूब के बहुत से निष्कर्ष चाहे गलत हों, पर अय्यूब अपने प्रश्नों, भावनाओं और विचारों और निराशाओं को बताने में स्पष्ट और ईमानदार था। जिसे वह जानता था कि उसे कैसा लग रहा है और कैसे रह सकता है। अय्यूब की तरह हमें यह जानते हुए कि परमेश्वर हम से प्रेम करता है और हमारी सहायता करेगा अपनी चिंताओं को उसके पास लाना चाहिए। पतरस ने लिखा, ''और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है'' (1 पतरस 5:7; NIV)।

एफ़. मिलस

टिप्पणियां

[1]ऐल्बर्ट बार्नस, *अय्यूब,* नोट्स ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट, सम्पा. रॉबर्ट फ्रू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1949), 1:184–85. [2]KJV में ''hell'' (नरक) का अनुवाद कई जगह Sheol (अधोलोक) हुआ है। परन्तु यह अनुवाद पुराने नियम के शब्द से बहुत अधिक मेल खाता है। NASB में ''Sheol'' शियोल (अधोलोक) के लिए ''hell'' (नरक) का इस्तेमाल नहीं हुआ है। और तो और ''hell'' (नरक) के लिए नये नियम का शब्द गेहन्ना (*gehenna*) है, ''हेडिस'' नहीं। [3]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 81. [4]वहीं। [5]वहीं। [6]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 149, एन. 11. देखें 26:12; भजन संहिता 74:13; यशायाह 51:9, 10. [7]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 1038. [8]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 60.